स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के तत्त्वावधान में जवाहरलाल स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान-जिपमेर, पांडिचेरी द्वारा 09 से 11 जनवरी, 2017 को आयोजित छठा राष्ट्रीय राजभाषा सम्मेलन

अब से कुछ वर्ष पूर्व स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने विभाग में और अपने देशभर में स्थित सम्बद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का कामकाज बढ़ाने और अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपना ज्यादा से ज्यादा काम हिंदी में करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए राजभाषा सम्मेलन आयोजित करने का निर्णय लिया। तत्कालीन सचिव महोदय की सहमति से मंत्रालय स्तर पर प्रतिवर्ष इस प्रकार के दो सम्मेलन आयोजित करने का फैसला किया गया। यह भी निर्णय लिया गया कि इस प्रकार के सम्मेलन बारी-बारी से देश भर में मंत्रालय के अधीनस्थ आने वाले कार्यालयों में आयोजत किए जाएंगे।

राजभाषा सम्मेलनों की शुरुआत

इस श्रृंखला की शुरुआत वर्ष 2012 में निम्हांस, बंगलौर (कर्नाटक) से हुई जब मंत्रालय की निगरानी में पहला दो दिवसीय राजभाषा सम्मेलन बंगलौर स्थित राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान संस्थान में 26-27 दिसंबर, 2012 को आयोजित किया गया। सम्मेलन बेहद सफल रहा। दूसरा राजभाषा सम्मेलन 22-23 फरवरी, 2013 को भारतीय पाश्चर संस्थान, कुन्नूर (तमिलनाडु) में आयोजित किया गया। 'ग' क्षेत्र में आयोजित यह सम्मेलन भी बहुत अधिक सफल रहा। दोनों सम्मेलनों के दौरान संपूर्ण मंच संचालन श्री राजेश श्रीवास्तव, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने किया। तीसरा सम्मेलन अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली में 12-12 फरवरी, 2014 को और चौथा सम्मेलन, एचएलएल, तिरुवनंतपुरम में 29-30 दिसंबर, 2014 को आयोजित किया गया। इसी श्रृंखला का पाँचवां राजभाषा सम्मेलन इसी वर्ष 17 से 19 फरवरी, 2016 में **राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान, मुंबई** में आयोजित किया गया। इसी श्रृंखला का छठा राष्ट्रीय राजभाषा सम्मेलन **जवाहरलाल स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान-जिपमेर, पांडिचेरी** में 09 से 11 जनवरी, 2017 को आयोजित किया गया। इन समस्त सम्मेलनों का कुशल और सफल संचालन श्री श्रीवास्तव ने किया।

दीप प्रज्ज्वलन और सरस्वती वंदना से शुभारंभ

इस सम्मेलन का आरंभ **जवाहरलाल स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान-जिपमेर, पांडिचेरी** के परिसर में ही स्थित शैक्षणिक ब्लॉक के चौथे तल पर मौजूद मिनी ऑडिटोरियम में दीप-प्रज्ज्वलन से हुआ। इस मौके पर आकाशवाणी, पुदुच्चेरी से पधारे कलाकारों-टाटा भानुमति, सुश्री वीणा, कुमारी ऊषा और अन्य ने सरस्वती वंदना का सस्वर पाठ किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे पुदुच्चेरी के माननीय सांसद श्री आर. राधाकृष्णन जबकि जिपमेर के निदेशक डॉ. सुभाष परिजा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। माननीय सांसद महोदय और निदेशक, जिपमेर ने दीप जलाकर सम्मेलन का विधिवत शुभारंभ किया। उनके साथ मंच पर मौजूद थे-स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के उप-निदेशक (रा.भा.) श्री चरण सिंह और सहायक निदेशक (रा.भा.) श्री राजेश श्रीवास्तव। जिपमेर की ओर से विकृति विज्ञान विभाग के आचार्य डॉ. सुरेंद्र कुमार वर्मा और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से श्री चरण सिंह ने सम्मेलन में देश भर से पधारे प्रतिनिधियों का मंत्रालय की ओर से स्वागत किया। इसके बाद श्री श्रीवास्तव ने मंत्रालय द्वारा अब तक आयोजित किए जा चुके समस्त सम्मेलनों की संक्षेप में जानकारी दी और इस सम्मेलन की प्रस्तावित रूपरेखा का भी उल्लेख किया।

कार्यक्रम का आरंभ करते हुए पुदुच्चेरी के माननीय सांसद श्री आर. राधाकृष्णन ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और उन्हें कार्यक्रम में आमंत्रित किए जाने पर आभार व्यक्त किया। श्री राधाकृष्णन ने कहा

कि भाषा ने न केवल आर्थिक रूप से और सामाजिक रूप से सफल होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है बल्कि यह लोगों को जोड़ने का माध्यम भी रही है। इस अवसर पर संस्थान जिपमेर के निदेशक डॉ. सुभाष परिजा ने राजभाषा हिंदी के अनूठेपन और उसके सरकारी कामकाज में इस्तेमाल किए जाने के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. परिजा ने उनके अपने संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला और बड़ी संख्या में मौजूद प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने इस बात का आभार जताया कि मंत्रालय ने राष्ट्रीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन करने के लिए उनके संस्थान का चयन किया। उन्होंने सम्मेलन के सफल होने के लिए अपनी शुभकामनाएं व्यक्त कीं।

सॉफ्टवेयरों की दुनिया में हिंदी के बढ़ते चरण-यूनिकोड के माध्यम से कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करना

सम्मेलन के पहले सत्र का विषय था-"***सॉफ्टवेयरों की दुनिया में हिंदी के बढ़ते चरण-यूनिकोड के माध्यम से कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करना***"। मुख्य व्याख्याता थे-राजभाषा विभाग के वरिष्ठ तकनीकी निदेशक श्री केवलकृष्ण। श्री केवलकृष्ण ने पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से सॉफ्टवेयर की दुनिया में हिंदी के बढ़ते कदमों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने बताया कि किसी भी कंप्यूटर को किसी सॉफ्टवेयर को खरीदे या डाउनलोड किए बिना चंद ही मिनटों में द्विभाषी बनाया जा सकता है।

श्री केवलकृष्ण ने माइक्रोसॉफ्ट द्वारा उपलब्ध कराए गए एक टूल की भी जानकारी दी जिसके माध्यम से तब तक अंग्रेजी कीबोर्ड के जरिए हिंदी में टाइपिंग की जा सकती है जब तक आप मूल रूप से हिंदी टाइपिंग सीख न लें। उन्होंने इसके प्रयोग के तरीके को विस्तार से बताया और स्लाइडों के माध्यम से तथा वर्ड फाइल पर कार्य करके प्रतिभागियों को समझाया।

उन्होंने वॉयस टाइपिंग के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी और प्रतिभागियों के समझ वॉयस टाइपिंग करके उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने प्रतिभागियों को मोबाइल पर भी वॉयस टाइपिंग करने की विधि की जानकारी दी। यह सत्र बेहद सफल रहा और खासकर उन सभी लोगों के लिए बेहद उपयोगी और आकर्षक रहा जिन्हें न तो हिंदी टाइपिंग आती है और न ही उनसे हिंदी टाइपिंग सीखना अपेक्षित है।

श्री केवलकृष्ण के वक्तव्य को बेहद सराहा गया और मौजूद प्रतिभागियों में सॉफ्टवेयरों के बारे में सीखने की ललक दिखाई दी।

सहज सरल अनुवाद की बारीकियां और प्राय: होने वाली त्रुटियाँ

दूसरे सत्र का विषय था- "***सहज सरल अनुवाद की बारीकियाँ और प्राय: होने वाली त्रुटियाँ***" और वक्ता थे स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के सहायक निदेशक (रा.भा.) श्री राजेश श्रीवास्तव। इस सत्र के अध्यक्ष थे-डॉ जे.पी. प्रसाद, वैज्ञानिक, ग्रेड 1, राष्ट्रीय जैविक संस्थान, नोएडा। श्री श्रीवास्तव ने पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से अनुवाद की सहजता, सरलता और बारीकियों पर विस्तार से चर्चा करते हुए इसके विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अनुवाद करना एक बहुत बड़ी कला है। हर कोई एक अच्छा अनुवादक नहीं हो सकता क्योंकि शब्द के बदले शब्द बैठाने मात्र से अनुवाद नहीं हो जाता। अनुवाद बहते हुए पानी-सा होता है जिसके प्रवाह में कोई अवरोध न हो और जिसे पढ़ने में अनुवाद, अनुवाद न होकर मूल पाठ सा ही लगे। उन्होंने बंग्ला से हिंदी में अनुदित अनेक उपन्यासों का उल्लेख किया जिन्हें पढ़ते समय अनुभव ही नहीं होता कि अनुदित ग्रंथ को पढ़ा जा रहा है। श्री श्रीवास्तव ने कहा कि अनुवाद को पढ़कर अगर समझने के लिए मूल भाषा का सहारा लेना पड़े तो उस अनुवाद का कोई अर्थ नहीं होता। अनुवाद सहज, सरल और बोधगम्य होना चाहिए-टेढ़ा-मेढ़ा, उलझा हुआ, जटिल और तोड़ मरोड़ कर बनाया हुआ नहीं।

श्री श्रीवास्तव ने बताया कि किसी भी अनुवाद को करने से पहले उसकी पृष्ठभूमि की जानकारी होना बहुत आवश्यक है, अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो सकता है। अनेक स्लाइडों के माध्यम से उन्होंने अनुवाद के अनेक उदाहरण प्रतिभागियों के लिए प्रस्तुत किए। प्रतिभागियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नोत्तरों ने इस सत्र को काफी रोचक बना दिया। उन्होंने कहा कि अनुवाद करते समय अप्रचलित और अमान्य शब्दों का इस्तेमाल करने से बचा जाना चाहिए और इनके स्थान पर सरल एवं सहजता से दिल में उतरने वाले शब्दों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। बेहद कठिन हिंदी का इस्तेमाल करने की बजाय ट्रांसलिटरेशन का सहारा लिया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि अनुवाद करते समय भाषागत संस्कार बहुत काम करता है। कुछ चीजें किसी भाषा विशेष से जुड़ी होती हैं और उसी में अच्छी लगती हैं लेकिन अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा में अकसर वह भाव आ नहीं पाता जिससे अनुवाद कृत्रिम सा दिखाई देने लगता है। अनुवाद को एक तो मूल रचना की भावना के करीब होना चाहिए और साथ ही उसमें एक तारतम्य होना चाहिए जिससे वह अनुवाद जैसा न दिखकर मूल पाठ जैसा ही दिखाई दे। जो अनुवाद अनुवाद जैसा दिखाई दे, वह वास्तव में अनुवाद होता ही नहीं है। इस सत्र को बेहद सराहा गया और प्रतिभागियों ने बीच-बीच में अनेक तर्क-वितर्क और चर्चाएं कीं।

वैश्विक परिवेश में हिंदी-ऊंचाइयों के नए पायदान पर

तीसरा सत्र ***"वैश्विक परिवेश में हिंदी-ऊंचाइयों के नए पायदान पर"*** विषय पर था जिसके वक्ता थे श्री हरिनारायण त्रिवेदी, सहायक निदेशक (रा.भा.), हिंदी प्रशिक्षण संस्थान। श्री त्रिवेदी का सत्र भी रोचक रहा। उन्होंने छोटे-छोटे तमाम वीडियो के माध्यम से यह समझाने का प्रयास किया कि किस तरह विदेशी व्यक्ति भी अब हिंदी के महत्व को समझ रहे हैं। उन्होंने बताया कि हिंदी संगीत विशेष रूप से विदेशियों को आकर्षित कर रहा है। उन्होंने विशेषकर संगीत के माध्यम से भाषा के विकास और उसकी लोकप्रियता पर चर्चा की।

कैंसर के निदान की नवीनतम तकनीकें और निवारक उपायों की भूमिका (कल आज और कल)

चौथा सत्र ***"कैंसर के निदान की नवीनतम तकनीकें और निवारक उपायों की भूमिका (कल आज और कल)"*** विषय पर था जिसके वक्ता थे डॉक्टर सुरेंद्र कुमार वर्मा, आचार्य, विकृति विज्ञान विभाग, जिपमेर, पुदुच्चेरी। सत्र की अध्यक्षता की मंत्रालय से पधारे श्री चरण सिंह, उप-निदेशक (रा.भा.) और श्रीमती किरण भारद्वाज, संयुक्त निदेशक (रा.भा.) ने। अपने रोचक और सहज सुबोध अंदाज में डॉक्टर वर्मा ने कैंसर से जुड़ी तमाम प्रमुख बातों पर प्रकाश डाला। उन्होंने न केवल कैंसर के प्रकार बताए बल्कि यह भी जानकारी दी कि किस किस्म के आहार और फास्टफूड से कैंसर होने की सबसे ज्यादा संभावना रहती है। उन्होंने यह भी बताया कि किस तरह कैंसर से बचा जा सकता है।

डॉ. वर्मा उन बड़ी हस्तियों का भी उल्लेख किया जिन्हें कैंसर का नासूर झेलना पड़ा और वे उसे पराजित करके अंतत: सामान्य जीवन जीने में सफल रहे। उन्होंने कहा कि किसी भी बीमारी को काबू करने के लिए यह जरूरी है कि यह क्यों होती है। यदि डाक्टर यह पता लगा ले तो इसका इलाज काफी आसान हो जाता है। पहले यह ब्रस्ट कैंसर की बीमारी काफी कम थी। अब 18 से 20 वर्ष के लोगों विशेष रूप से, महिलाओं में ब्रैस्ट कैंसर हो रहा है। पहले लंग कैंसर केवल पुरूषों में होता था लेकिन अब महिलाओं में भी शुरू हो गया है। वर्ड में लंग कैंसर एक नम्बर पर आता है उसके बाद ब्लड कैंसर भी आ गया है।

डॉक्टर वर्मा ने कहा कि कैंसर की कुछ दवाईयों के साइड इफेक्ट होते हैं। कुछ इलाज हैं पर वह भी काफी मंहगे हैं। इसमें काफी पैसा लग जाता है। दुर्भाग्य यह है कि आज हम योग नहीं करते जिससे इस तरह की बीमारियों को काफी हद तक दूर किया जा सकता है। हम अपनी भारतीय संस्कृति को भूल गए हैं। अगर आप उपवास करें तो इससे आपका शरीर ठीक रहेगा और शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता आ जाएगी।

इस सत्र के माध्यम से डॉक्टर वर्मा ने लोगों को न केवल कैंसर के कुछ आम प्रकारों की जानकारी दी बल्कि वे कैसे होते हैं, किससे होते हैं और उनसे कैसे बचा जा सकता है, इस बारे में भी विस्तार से चर्चा की।

राजभाषा नीति का संक्षिप्त परिचय एवं कार्यालय के कामकाज में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग

पाँचवे सत्र में ***हिंदी और तमिल भाषा के विकास में साहित्यकारों, विद्वानों और राजनेताओं का योगदान-तुलनात्मक अध्ययन*** विषय पर पांडिचेरी केंद्रीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग लेक्चरर एवं अध्यक्ष श्रीमती एस. पद्मप्रिया ने अपने विचार व्यक्ति किए। इस सत्र के अध्यक्ष थे-मंत्रालय से पधारे सहायक निदेशक श्री राजेश श्रीवास्तव और श्री प्रेम सिंह तोमर, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, एम्स, दिल्ली।

श्रीमती पद्मप्रिया ने दक्षिण भारत के हिंदी विद्वानों की विस्तार से चर्चा की और उनके योगदानों का उल्लेख किया। उन्होंने बालशौरी रेड्डी, डॉ. एम. शेषन, शौरीराजन, एन. सुंदरम जैसे अनेक नाम लेते हुए बताया कि किस तरह इन विद्वानों ने हिंदी की सेवा की है लेकिन उन्होंने इस बात पर दु:ख भी व्यक्त किया कि हिंदीभाषी क्षेत्र में दक्षिण की भाषाओं पर काम करने वाले लोग काफी कम हैं। उन्होंने यह भी कहा कि दक्षिण भारत में तो त्रिभाषा सूत्र लागू हो गया है पर अभी उत्तर भारत में यह काम होना शेष है।

श्रीमती एस. पद्मप्रिया ने दक्षिण भारतीय हिंदी विद्वानों द्वारा अब तक किए गए और किए जा रहे कार्यों की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने उन तमाम पुस्तकों का भी ब्यौरा दिया जिन्हें हिंदी से दक्षिण भारतीय भाषाओं में या दक्षिण भारतीय भाषाओं से हिंदी में अनूदित किया गया और जिन्हें काफी लोकप्रियता हासिल हुई।

हिंदी की विकास यात्रा-आदिकाल से अब तक

छठे सत्र का विषय था- **"*हिंदी की विकास यात्रा-आदिकाल से अब तक*"** और इसके वक्ता थे उप-निदेशक (रा.भा.) श्री चरण सिंह। इस सत्र की अध्यक्षता की- श्री केवल शर्मा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, पीजीआई, चंडीगढ़ और श्री एस. वेरामूर्ति, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, भारतीय पाश्चर संस्थान ने। अपना व्याख्यान आरंभ करते हुए उन्होंने कहा कि धरती पर भाषा का पहली ध्वनि अर्थात् पहला स्वर गुंजायमान नाद था उसी से भाषा की उत्पत्ति का मार्ग प्रशस्त हुआ।

हिंदी का इतिहास वैदिक काल से ही प्रारम्भ होता है और वैदिक इतिहास का साहित्यिक रूप ऋग्वेद है। यह मूलतः छन्दों में निर्मित है इसलिए इस भाषा को वैदिक भाषा कहते हैं। लौकिक संस्कृत में छन्द का प्रयोग सबसे पहले महर्षि बाल्मीकि ने अपने ग्रन्थ रामायण में किया। संस्कृत के समानान्तर बोलचाल की लोकभाषा के रूप में प्राकृत का विकास हुआ, जिसका पूर्ववर्ती रूप पालि तथा उत्तरवर्ती रूप अपभ्रंश के नाम से जाना जाता है। इसी अपभ्रंश से आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का विकास हुआ है। इसी के चलते हिंदी विकसित होने वाली सबसे प्रभावी एक बड़ी भाषा बनकर उभरी है।

श्री चरण सिंह ने दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान माननीय प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के विचारों को उद्धृत करते हुए कहा, *"भाषा, हवा का महकता हुआ झोंका है जो बगीचों से सुगंध और ड्रेनेज से दुर्गंध को बटोरते हुए चलती है जिस पीढ़ी, जिस इलाके और हालातों से भाषा गुजरती है, उसे अपने में सम्माहित करती चलती है। इस लिए भाषा चैतन्य होती है।"* अपने व्याख्यान का समापन करते हुए उन्होंने उम्मीद जताई कि भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी, एक दिन विश्व की जन संपर्क भाषा बन सकेगी।

खुला सत्र- प्रतिभागियों से परिचर्चा और सुझाव

सम्मेलन के अंतिम चरण में एक खुले सत्र का आयोजन किया गया जिसमें मंत्रालय के विभिन्न कार्यालयों से देश भर से पधारे प्रतिभागियों से अपने उद्गार प्रकट किए, अपने कार्यालय में किए जा रहे हिंदी कार्यों का ब्यौरा दिया और मंत्रालय द्वारा कराए गए इस बेहद सफल सम्मेलन के लिए उसका आभार

प्रकट किया। इस अवसर पर अनेक प्रतिभागियों ने विविध विषयों पर हुए इस राजभाषा सम्मेलन, शानदार मंच-संचालन और शानदार सम्मेलन स्थल की प्रशंसा की और कहा कि महर्षि अरविंद की भूमि पर ऐसा सम्मेलन होना और उसमें उनका भाग लेना उनके लिए परम सौभाग्य की बात है।

इस अवसर पर श्री प्रेम सिंह तोमर, एम्स, नई दिल्ली, श्री केवल शर्मा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, पीजीआई, चंडीगढ़, श्री अरविंद कुमार, हिंदी अधिकारी, राष्ट्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण संस्थान, दिल्ली, डॉ. जे.पी. प्रसाद, वैज्ञानिक, ग्रेड-1, राष्ट्रीय जैविक संस्थान, दिल्ली, श्रीमती किरण भारद्वार, संयुक्त निदेशक (रा.भा.), स्वास्थ्य और परिवार कल्याण महानिदेशालय, दिल्ली, श्री शिंदे पांडुरंग, अनुवादक, निम्हांस, बंगलौर, श्री संजय राघव, वरिष्ठ अनुवादक, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, श्रीमती जयश्री, हिंदी अधिकारी, जिपमेर आदि जैसे अनेक प्रतिभागियों ने अपने विचार व्यक्त किए और सम्मेलन को बेहद सफल सम्मेलन करार दिया। सभी प्रतिभागियों से प्राप्त हुए लिखित फीडबैक में भी प्रतिभागियों ने सम्मेलन की अत्यन्त सराहना की।

इस अवसर पर सबसे ज्यादा आकर्षण का केंद्र रही- श्री चक्रधर द्वारा विरचित संस्कृत कविता जिसमें उन्होंने संपूर्ण राजभाषा सम्मेलन की झलक दिखा दी। सारे वक्ताओं के नाम और उनके विषयों को समाहित करते हुए उनकी प्रशंसा में लिखी गई इस रोचक और मजेदार कविता ने सारे श्रोताओं का मन मोह लिया।

समापन समारोह

11 जनवरी, 2017 को सम्मेलन समाप्त हो गया। इस मौके पर आयोजित समापन समारोह की अध्यक्षता जिपमेर के निदेशक डॉ. सुभाष परिजा ने की। उनके साथ मंच पर विराजमान थे- श्री चरण सिंह, श्री राजेश श्रीवास्तव और जिपमेर के अपर आचार्य और विभागाध्यक्ष, विधि चिकित्सा विज्ञान विभाग, डॉक्टर कुश कुमार साहा।

निदेशक महोदय ने मंत्रालय की निगरानी में आयोजित इस कार्यक्रम की प्रशंसा की और उसकी सफलता पर बधाई दी। उन्होंने मंत्रालय के अधिकारियों सहित सभी उपस्थिति जनसमूह का आभार प्रकट किया और आशा व्यक्त की कि वे इस सम्मेलन से जरुर कोई अच्छी सीख अपने साथ ले जा रहे होंगे। श्री चरण सिंह, उप-निदेशक (रा.भा.) ने मंत्रालय की ओर से विशेष रूप से निदेशक महोदय और डॉक्टर साहा का आभार प्रकट किया जिनके मार्गदर्शन में यह कार्यक्रम इतना सफल तरीके से संपन्न हुआ। उन्होंने संस्थान के अन्य सहयोगी अधिकारियों का भी आभार प्रकट किया और उपस्थित सभी प्रतिभागियों का आभार प्रकट किया। श्री सिंह ने विशेष रूप से मंत्रालय के संयुक्त सचिव महोदय का आभार प्रकट किया जिनके संपूर्ण मार्गदर्शन और सहयोग के बिना इस कार्यक्रम का आयोजित हो पाना संभव नहीं था। उन्होंने बेहद कुशल और शानदार गरिमामय मंच संचालन के लिए अपने साथी अधिकारी श्री राजेश श्रीवास्तव को भी बधाई दी जिन्होंने अपने व्याख्यान ही नहीं, मंच संचालन से भी सभी को सम्मोहित किया।

श्री श्रीवास्तव ने इस मौके पर संस्थान के निदेशक महोदय, डॉक्टर साहा के साथ-साथ श्रीमती जयश्री, हिंदी अधिकारी और श्री रंजीत, हिंदी अनुवादक का भी आभार व्यक्त किया जिन्होंने इस सम्मेलन की सफलता के लिए अथक मेहनत की। उन्होंने श्री चरण सिंह जी द्वारा दिए गए आत्मीय सहयोग और समर्थन के लिए उनका भी आभार व्यक्त किया।

इसके पश्चात, निदेशक, जिपमेर द्वारा सभी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र के वितरित किए गए। इसी अवसर पर जिपमेर कार्यालय द्वारा हिंदी पखवाड़े के अवसर पर कराई गईं कुछ प्रतियोगिताओं और नराकास से संबंधित पुरस्कारों का वितरण भी किया गया। अगला राष्ट्रीय राजभाषा सम्मेलन मैसूर में होगा, इस घोषणा के साथ ही एक बेहद सफल राजभाषा सम्मेलन संपन्न हो गया।

♦♦♦♦♦

भाग लेने वाले प्रतिभागियों की सूची

क्र. सं.	प्रतिभागी अधिकारी का नाम और पदनाम	कार्यालय का नाम
1.	श्री चरण सिंह, उप-निदेशक (रा.भा.)	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय
2.	श्री राजेश श्रीवास्तव, सहायक निदेशक (रा.भा.)	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय
3.	श्री प्रीतम दास, पीए	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय
4.	श्री संजय राघव, वरिष्ठ अनुवादक	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय
5.	श्रीमती किरण भारद्वाज, संयुक्त निदेशक (रा.भा.)	स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय, नई दिल्ली
6.	श्री केवल कृष्ण, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक	राजभाषा विभाग, नई दिल्ली
7.	श्री प्रेमसिंह तोमर, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान-एम्स, नई दिल्ली
8.	श्री प्रमोद कुमार, वरिष्ठ अनुवादक	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान-एम्स, नई दिल्ली
9.	श्री एस.के.नेमा, लेखाधिकारी	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान-एम्स, रायपुर
10.	श्री अमित कुमार बंजारे, कार्यालय सहायक	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान-एम्स, रायपुर
11.	श्री एन.आर. विश्नोई, उप-निदेशक (प्रशासन)	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान-एम्स,जोधपुर
12.	श्री मनीष कुमार श्रीवास्तव, प्रशासनिक अधिकारी	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान-एम्स,जोधपुर
13.	सुश्री सर्जिना एम, हिंदी अनुवादक	अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान, मैसूर
14.	सुश्री पी. पद्मावती, सहायक, जीवरसायन	जिपमेर, पुदुच्चेरी
15.	श्री केवल शर्मा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (सतर्कता)	स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुं. संस्थान, चंडीगढ़
16.	डॉक्टर पंकज अनेजा, हिंदी अधिकारी	स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुं. संस्थान, चंडीगढ़
17.	श्री जे.पी.प्रसाद, वैज्ञानिक वर्ग-1	राष्ट्रीय जैविक संस्थान, नोएडा
18.	श्री सुशील कुमार दीक्षित, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	राष्ट्रीय जैविक संस्थान, नोएडा
19.	श्री अरविंद कुमार, सहायक निदेशक (रा.भा.)	राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान, दिल्ली
20.	डॉक्टर अंकुर यादव, सहायक प्रोफेसर	राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान, दिल्ली
21.	श्री मौहम्मद तैयब अंसारी, सहायक इंजीनियर (सिविल)	एचएससीसी, नोएडा, दिल्ली
22.	श्री शिंदे पांडुरंग, वरिष्ठ अनुवादक	राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य संस्थान, बंगलुरु
23.	श्री रामखेलावन यादव, अवर श्रेणी लिपिक	अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान, मुंबई
24.	श्री रामतिलक वर्मा, अवर श्रेणी लिपिक	अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान, मुंबई
25.	श्रीमती हेमलता, निम्न श्रेणी लिपिक	क्षेत्रीय कार्यालय (स्वास्थ्य और परिवार कल्याण), दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल, शिमला
26.	डॉक्टर एन.आर.बेहेरा, अ.निदेशक	परिवार कल्याण प्रशिक्षण तथा अनुसंधान केंद्र, मुंबई

27.	डॉक्टर सुधीर वंजे, उप-निदेशक	परिवार कल्याण प्रशिक्षण तथा अनुसंधान केंद्र, मुंबई
28.	श्री आ. वेरामूर्ति, प्रशासनिक अधिकारी	भारतीय पाश्चर संस्थान, कुन्नूर
29.	श्री पी. शशिकुमार, निदेशक के वरि. निजी सहायक	भारतीय पाश्चर संस्थान, कुन्नूर
30.	श्री सुबोध कुमार	भारतीय खाद्य निगम, पुदुच्चेरी
31.	सुश्री टाटा भानुमति	आकाशवाणी, पुदुच्चेरी
इसके अलावा, जिमपेर, पुदुच्चेरी से करीब 35 अधिकारियों/कर्मचारियों ने और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पुदुच्चेरी से जुड़े 25 से ज्यादा कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों ने सम्मेलन में उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया।		